शिर्क के मसाइल 7

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफ़े अल्लाह तअला के लिये हैं जो सब जहानों का पालने वाला है। हम उसी की तअरीफ़ करते और उसी का शुक्र अदा करते हैं। अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, वह अकेला है। कोई उसका साझी व शरीक नहीं और मुहम्मद सल्ललाहु अलेहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं।

अल्लाह की बेशुमार रहमतें, बरकतें और सलामती नाज़िल हो मुहम्मद सल्ल. पर और उनकी आल व औलाद और असहाब पर ।

अम्मा बअद !

शिर्क का मतलब शरीक करना, साझीदार बनाना होता है।

शरीयत में ''शिर्क'' अल्लाह के साथ शरीक करने को कहते हैं।

चाहे यह शिरकत (अल्लाह की) इबादत में हो, सिफ़ात (गुणों) में हो या उसकी ज़ात में।

शिर्क की दों क़िस्में हैं।

1. शिर्के अकबर (बड़ा शिर्क) 2. शिर्के असग़र (छोटा शिर्क)

अल्लाह तअला अपनी ज़ात, सिफ़ात और इबादात में अकेला है, बे मिसाल है। किसी जानदार या बे जान, ज़िन्दा या फ़ौत शुदा मख़्लूक़ को अल्लाह की ज़ात में, सिफ़ात में या इबादत में शरीक करना या उसके बराबर समझना या इबादत के वोह काम जो अल्लाह के लिये ख़ास हैं, किसी और के लिये करना ''शिर्के अकबर'' कहलाता है। अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि रसूल अल्लाह सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया–जो शख़्स इस हाल में मरा कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराता था। वह आग (जहन्नम) में दाख़िल किया जायेगा। (बुख़ारी–6683)

रिया (दिखाने के लिये कोई काम करना) और ग़ैरूल्लाह की क़सम खाना वग़ैरह ''शिर्के असग़र'' कहलाता है।

अबु सईद रज़ि. से रिवायत है कि हम लोग ''मसीह दज्जाल'' का ज़िक्र कर रहे थे कि आप सल्ल. तशरीफ़ लाये और इर्शाद फ़रमाया ''क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न बतांऊ जिसका मुझे तुम्हारे बारे में मसीह दज्जाल से भी ज़्यादा डर है ?

हम ने अर्ज़ किया क्यों नहीं तो आप सल्ल. ने फ़रमाया ''शिर्के ख़फ़ी'' (और वह यह है कि) एक आदमी नमाज़ पढ़ता है और फिर अपनी नमाज़ को इसलिए लम्बी कर देता है कि उसे कोई (दूसरा शख़्स) देख रहा है।

(इब्ने माजा–4204)

अबु बकराह रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने तीन बार फ़रमाया–क्या मैं तुम लोगों को सबसे बड़े गुनाह के बारे में न बताऊँ ? लोगों ने कहा क्यों नहीं ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल.! आप सल्ल. ने फ़रमाया कि वह अल्लाह के साथ शिर्क है। (मुस्लिम–118)

1.**''शिर्क'' कुरआने मजीद की रोशनी में:–** अल्लाह तआला शिर्क को कभी माफ़ नहीं करेगा। अलबत्ता उसके सिवाए गुनाहों को जिसके लिये चाहे माफ़ कर सकता है। (निसॉ–आयत–48)

2. शिर्के अकबर करने वाला इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है और अगर हालते शिर्क ही

https://archive.org/details/@asbah9

में मर गया तो हमेशा के लिये जहन्नम में रहेगा।
''जिसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराया। उस पर अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी और उसका ठिकाना जहन्नम में है। (माईदा–72)

3. शिर्क सबसे बड़ी जहालत है।

4. शिर्क सारे नेक आमाल बर्बाद कर देता है।'' ऐ नबी सल्ल.! इन से कहो–फिर क्या ऐ जाहिलो! तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत करने के लिये मुझसे कहते हो? (हालांकि) तुम्हारी तरफ़ और तुम से पहले हो गुज़रे सभी नबीयों की तरफ़ यह वहय भेजी जा चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारे आमाल ज़ाया व बर्बाद हो जायेंगे।'' (ज़ुमर–64–65)

5. ''जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया। वह गोया आसमान से गिर पड़ा। अब या तो उसे परिन्दे उचक ले जायेंगे या ख़्वाहिशे नफ़्स उसको ऐसी जगह ले जाकर फैंक देगी जहां उस के चिथड़े उड़ जायेंगे। (हज्ज–31)

6. मुश्रिक को तौहीद का ज़िक्र बहुत बुरा लगता है।'' जब एक अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो आख़िरत पर ईमान न रखने वालों के दिल कुढ़ने लगते हैं और जब अल्लाह के सिवा दूसरों का ज़िक्र किया जाता है तो यकायक ख़ुशी से खिल उठते हैं।'' (ज़ुमर–45)

7. शिर्क के बारे में वाल्दैन की इताअत करना–हराम है। ''अगर वाल्दैन ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ किसी को शरीक ठहराए तो उनका कहना न मानना।'' (अन्कबूत–08, लुक़मान–15)

8. मुश्रिक मर्द या औरत का तौहीद परस्त औरत या मर्द से निकाह हराम है। ''मुश्रिका औरतों से निकाह हरगिज़ न करो जब तक वोह ईमान न ले आएं और अपनी औरतों के भी निकाह मुश्रिक मर्दों से हरगिज़ न करो जब तक वोह ईमान न ले आयें।'' (बक़र–221)

9. शिर्क की हालत में वफ़ात पाने वाले मुश्रिकों के लिये मग़्फ़िरत की दुआ करना मना है।
'' नबी सल्ल. को और उन लोगों को जो ईमान लाये हैं, जाइज़ नहीं कि मुश्रिकों के लिये दुआए ए मग़्फ़िरत करें। चाहे वोह उनके रिश्तेदार ही क्यों न हों। (तोबा–113)

10. मुश्रिक और उनके मअबुद दोनों कमज़ोर हैं।
''अल्लाह को छोड़ कर जिन मअबूदों को तुम पुकारते हो, वोह सब मिल कर एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते बल्कि मक्खी अगर उनसे कोई चीज़ छीन ले जाये तो वोह उसे छुड़ा भी नहीं सकते। मदद चाहने वाले भी कमज़ोर और जिनसे मदद चाही जाती है, वह भी कमज़ोर।'' (हज्ज–73)

मुश्रिकों के लिये क़ुरआने करीम की दावते फ़िक्र–

'' तुम कह दो कि जंगल और समन्दर के अंधियारों में कौन तुम्हें ख़तरों से बचाता है? कौन है जिससे तुम मुसीबत के वक़्त गिड़गिड़ा कर और चुपके चुपके दबी आवाज़:– मैं फरियाद करते हो? अगर हमको तूने इस मुसीबत से बचा लिया तो हम ज़रूर शुक्र करने वालों में होंगे।'' (अनआम–63)
''कहो! अल्लाह तअला तुम्हें उससे और हर तक्लीफ़ से निजात देता है, फिर तुम हो कि उसी के साथ शिर्क करते हो।'' (अनआम–64)

2. हमने जिन्नों और इन्सानों को सिर्फ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। (ज़ारियात–56)

शिर्क सुन्नते रसूल सल्ल. की रोशनी में

1. कबीरा गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह शिर्क है। अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि मैंने रसूल अल्लाह सल्ल. से पूछा–अल्लाह तआला के नज़दीक कौन सा

https://archive.org/details/@asbah9

गुनाह सब से बड़ा है ? तो आप सल्ल. ने इर्शाद फ़रमाया ''तू अल्लाह के साथ शरीक करे हालाकि उसने तुझे पैदा किया है।'' अब्दुल्लाह रज़ि. कहते हैं कि मैने कहा–हां वाक़ई यह तो बहुत बड़ा गुनाह है। फिर मैंने अर्ज़ किया–शिर्क के बाद कौन सा गुनाह बड़ा है? तो आप सल्ल. ने फ़रमाया ''फिर यह कि तू अपनी औलाद को इस डर से क़त्ल करे कि वह तेरे साथ खाना खायेगी। ''फिर मैंने अर्ज़ किया–उसके बाद तो आप सल्ल. ने फ़रमाया–कि ''तू पडौसी की बीवी के साथ ज़िना करे।'' (मुस्लिम –116,बुख़ारी–6001 और 7520)

2.शिर्क सब से बड़ा ज़ुल्म है। अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. कहते हैं जब सूरह अनआम की 82 नम्बर आयत ''वह लोग जो ईमान लाये और अपने ईमान के साथ ज़ुल्म को नहीं मिलाया'' नाज़िल हुई तो सहाबा रज़ि. परेशान हो गये और कहने लगे कि हम में कौन ऐसा है जिसने ईमान लाने के बाद कोई ज़ुल्म नहीं किया तो आप सल्ल. ने फ़रमाया यहा ज़ुल्म से मुराद शिर्क है। (बुख़ारी–4776)

3.शिर्क अल्लाह को सबसे ज़्यादा तक्लीफ़ देने वाला गुनाह है। अबु मूसा अशअरी रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया ''तक्लीफ़ देह बात सुन कर अल्लाह तआला से ज़्यादा सब्र करने वाला कोई नहीं। मुश्रिक कहते हैं कि अल्लाह की औलाद है, फिर भी अल्लाह उन्हें आफ़ियत में रखता है और रोज़ी देता है।'' (बुख़ारी–7378)

4.क़यामत के दिन मुश्रिक को उसके नेक आमाल का बदला नहीं मिलेगा। मेहमूद बिन लबीद रज़ि. कहते हैं कि रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''तुम्हारे बारे में मुझे जिस चीज़ का सबसे ज़्यादा डर है वोह शिर्के असग़र है।'' सहाबा रज़ि. ने अर्ज़ किया के रसूल सल्ल. शिर्के असग़र क्या है? तो आप सल्ल. ने फ़रमाया ''रिया'' (दिखावा)। क़यामत के दिन जब लोगों को उनके आमाल का बदला दिया जा रहा होगा तो अल्लाह रिया कारों से कहेगा ''जाओ उन लोगों के पास जिन को दिखाने के लिये तुम नेक अमल किया करते थे और फिर देखो तुम उन से क्या बदला (अज्र) पाते हो? '' (मुसनद अहमद–सिलसिला – अहदीस अल सहीहा–जिल्द–2 सफ़ा–951)

5.रसूल सल्ल. ने मुश्रिकों के लिये बद दुआ की। अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि. से रिवायत है कि रसूल सल्ल. ने बेतुल्लाह शरीफ की तरफ़ मुहं करके क़ुरैश के 6 आदमीयों के लिए बद दुआ फ़रमायी– (बुख़ारी–3960, मुस्लिम–4058)

6.नबी सल्ल. के साथ करीबी रिश्ता भी मुश्रिक को जहन्नम के अज़ाब से न बचा सकेगा। इब्ने अब्बास रज़ि. से रिवायत है कि रसूल सल्ल. ने फ़रमाया–''जहन्नमियों में सबसे हल्का अज़ाब अबु तालिब को होगा। वह आग की दो जूतियां पहने होंगे जिनसे उनका दिमाग़ खौल रहा होगा।''(मुस्लिम–339)

7.ऐसी जगह जहां शिर्क किया जाता था या किया जाता हो वहां जाइज़ इबादत करना भी मना है।

साबित बिन दहाक रज़ि. से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूल सल्ल. के ज़माने में 'बवाना' नामी जगह पर ऊंट ज़िब्ह करने की नज़र मानी। वह रसूल सल्ल. की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मैंने बवाना में ऊटं ज़िब्ह करने की नज़र मानी है। आप सल्ल. ने पुछा ''क्या वहां जाहिलियत के ज़माने में कोई बुत था जिसकी पूजा की जाती रही हो ?'' सहाबा रज़ि. ने कहा कि नहीं। तब आप सल्ल. ने पूछा–क्या वहां शिर्क करने वालों का कोई मेला लगता था? सहाबा रज़ि. ने कहा–नहीं। तब आप सल्ल. ने फ़रमाया ''अपनी नज़र पूरी करो और याद रक्खो कि अल्लाह की नाफ़रमानी वाली नज़र पूरी करना जाइज़ नहीं और न ही वोह नज़र जो इन्सान के बस में न हो।'' (अबुदाऊद–3265)

https://archive.org/details/@asbah9

शिर्क की कुछ मिसालें-

1 .क़ब्र परस्ती

फ़ौत शुदा औलिया से ज़रूरतों को पूरा करने, परेशानियों को दूर करने और मदद चाहने का नाम क़ब्र परस्ती है। जबकि इर्शादे बारी तआला है ''तुम जिन लोगों की अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो, वह तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकते और न वोह अपनी मदद कर सकते है।'' (सूरह आराफ़–आयत–197)

''अगर अल्लाह तुझको कोई नुक्सान पहुंचाना चाहे तो उसको अल्लाह के सिवा कोई रोक नहीं सकता और अगर अल्लाह यह इरादा कर ले कि तुझे नफ़ा पहुंचाना है तो उसके फ़ज़्ल को भी कोई रोक नहीं सकता। '' (युनुस–107)

इसी तरह फ़ौत शुदा अम्बिया और सालिहीन वग़ैरह को शिफ़ाअत के लिए या मुसीबतों से छुटकारा पाने के लिये पुकारना भी शिर्क है।

''लोग अल्लाह के सिवा ऐसों की इबादत करते है जो न उनकों नुक्सान पंहुचा सके और ना नफ़ा। और कहते यह है कि ये अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिशी हैं। (युनुस–18)

कुछ ''लोग तो शेख़ या वली के नाम को क़याम व कुऊद और परेशानीयों के वक्त का ज़िक्र बनाये हुऐ हैं। जब भी कोई मुसीबत या परेशानी उन पर पड़ती है तो या मुहम्मद, या अली, या हुसैन, या बदवी, या शाजली, या ग़ौस, या रफ़ाई या ख़्वाजा या दाता गंज बख़्श जैसे नामों के ज़रीये फ़रियाद करते हैं।

जबकि अल्लाह तआला फ़रमाता है ''अल्लाह के अलावा जिन को तुम पुकारते हो वह तुम्हारी ही तरह के बन्दे (मख़्लूक़) हैं। (आराफ़–194)

कुछ क़ब्र परस्त तो क़ब्र का तवाफ़ करते और उसके अरकान को छूते, उनसे, तबर्रूक़ हासिल करते और उनका बोसा लेते हैं ।क़ब्र की मिटटी अपने चेहरों पर मलते और उन का सज्दा करते हैं। कुछ लोग क़ब्र के सामने बाअदब खड़े होकर बीमारी से शिफ़ा और औलाद तलब करते हैं और मुसीबतों से निजात मांगते हैं। कभी साहिबे क़ब्र को पुकार कर कहा जाता है कि बाबा बहुत दूर से आया हूँ मायूस न लौटाना।

जबकि इर्शादे बारी तआला है '' उन से बढ़कर गुमराह कौन हो सकता है? जो अल्लाह के सिवाए ऐसों को पुकारते है जो क़यामत तक उसकी दुआ नहीं सुन सकते बल्कि वह उन की दुआ के बारे में जानते तक नहीं।'' (अहकाफ़–05)

नबी सल्ल. ने फ़रमाया '' जिस की मौत इस हालत में हुई कि वह अल्लाह के अलावा किसी और को भी पुकारता था, तो उसका ठिकाना जहन्नम है।'' (बुख़ारी–1283)

कुछ लोग क़ब्रों (मज़ारो) के पास अपने सिरो को मुंडवाते हैं। कछ लोग मज़ार या दरगाह की ज़ियारत को छोटा हज्ज समझते हैं। कुछ यह अक़ीदा रखते है कि औलिया को दुनिया में तसर्रूफ़ का हक़ हासिल है और वोह नफ़े और नुक्सान के भी मालिक हैं। जबकि अल्लाह तआला का फ़रमान है ''अगर अल्लाह की तरफ़ से तुम को किसी तरह की तक्लीफ़ पहुंचे तो उसे अल्लाह के अलावा कोई दूर नहीं कर सकता और अगर अल्लाह तुम्हारे साथ भलाई करना चाहे तो उसके फ़ज़्ल को कोई भी रोक नहीं सकता।'' (अनआम–17)

नबी सल्ल. ने फ़रमाया ''यहुदियों और ईसाईयों पर अल्लाह की लानत हो, उन्होंने अपने नबीयों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया। '' (रावी–अबु हुरैरा रज़ि.–मुस्लिम–862, आईशा रज़ि.–मुस्लिम–860, बुख़ारी–3454)

जुन्दब बिन अब्दुल्लाह रज़ि. की रिवायत में है कि आप सल्ल. ने फ़रमाया–''तुम से पहले के लोगों ने अपने नबीयों और बुज़ुर्गो की क़ब्रों को सज्दागाह बना रखा थ। इस लिये ख़बर दार तुम क़ब्रो को सज्दागाह न बना लेना।'' (मुस्लिम–864)

https://archive.org/details/@asbah9

2. **ग़ैरूल्लाह के लिये कुर्बानी:–** इर्शादे बारी तआला है ''अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो।'' (कौसर–आयत–02) मतलब यह कि कुर्बानी अल्लाह के नाम पर और अल्लाह के लिये होना चाहिये।
अली रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया '' उस शख़्स पर अल्लाह की लानत हो जिसने अल्लाह के अलावा किसी और (ग़ैरूल्लाह) के लिये कुर्बानी की।'' (मुस्लिम–5417)
3. **ग़ैरूल्लाह के लिये नज़र औ नियाज़:–** अल्लाह के अलावा किसी के लिये भी नज़रों–नियाज़ करना शिर्क (हराम) है। (बक़रा–173,माईदा–03, अनआम–145, नहल–115)
4. **हादेसात और इन्सानी ज़िन्दगी पर सितारों की तासीर का अक़ीदा:–** ज़ैद बिन ख़ालिद जहनी रज़ि. से मरवी एक हदीस का मफ़हूम है कि ''अगर कोई शख़्स सितारों की तासीर का अक़ीदा रखता है तो वह मुश्रिक है।'' (मुस्लिम–96)

5. **तअवीज़ गन्डों का अक़ीदा:–** वह चीजें जो अल्लाह की तरफ़ से फ़ायदे मन्द नहीं बनाई गई। उनसे फ़ायदे की उम्मीद रखना शिर्क है। जैसा कि कुछ लोग तअवीज़ गन्डों पर यकीन सिर्फ़ इसलिए रखते हैं कि किसी काहिन या जादूगर ने बतलाया है या फिर उनके ख़ानदान में ऐसा होता आया है। उसको अपने बच्चों के गले में नज़रे बद से बचाव के लिए लटकाते हैं या जिस्म में बांधते या गाड़ी वग़ैरह पर लटकाते हैं। या कुछ लोग मुख़्तलिफ़ क़िस्म के नगों वाली अंगुठियां पहनते हैं और यह अक़ीदा रखते हैं कि यह अगुंठियां मुसीबतें दूर कर देगी। इन चीज़ों का लटकाना या बांधना हराम है।
इसलिए कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया ''जिसने तअवीज़ लटकाई उसने शिर्क किया।''
(मुसनद अहमद जिल्द 4 सफ़ा–154, मुसतदरक हाकिम–जिल्द 4 सफ़ा–417)
नबी सल्ल. ने यह भी फ़रमाया ''जो शख़्स कोई चीज़ लटकाये, उसे उसी चीज़ के हवाले कर दिया जाता है।'' (नसाई–4085, तिर्मिज़ी–1885)
नबी सल्ल. का यह भी इर्शाद है ''जिसने गिरह में फूंका, उसने जादू किया और जिसने जादू किया उसने शिर्क किया।'' (तबरानी–सही, नसाई–4085)
6. **ग़ैरूल्लाह की क़सम:–** इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया ''जिसने ग़ैरूल्लाह की क़सम खाई, उसने शिर्क किया।'' (मुसनद अहमद)
एक हदीस में है कि ''अगर किसी ने लात और उज़्ज़ा की क़सम खाई तो वह ला इलाहा इल्ललललाह पढ़ ले।'' (बुख़ारी–6650)
एक हदीस में है कि ''बाप–दादा की क़सम मत खाओ। जिसे क़सम खानी ही हो वह या तो अल्लाह की क़सम खाये या ख़ामोश रहे।'' (बुख़ारी–6646, मुस्लिम–3150)
7. **जादू– टोना करना–कराना:–** अबु हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने फ़रमाया ''तबाह कर देने वाली चीज़ अल्लाह के साथ शिर्क करना है, उससे बचों और जादू–टोना करने कराने से भी बचों।'' (बुखारी–5764)
8. **कुछ लोग कहा करते है:–** (अल्लाह और आप की पनाह, मुझे तो सिर्फ अल्लाह और आपका सहारा है। यह अल्लाह और आप की नवाज़िश है। अल्लाह और आप के सिवाए मेरा कोई नहीं है। मेरे लिए अल्लाह आसमान में और आप ज़मीन में है। अगर अल्लाह और फ़ला न होते) इन तमाम सूरतों में अल्लाह के बाद लफ्ज़ ''फिर का इस्तेमाल ज़रूरी है। इसी तरह यह कहना कि मैं इस्लाम से बरी हूं या ज़माने को बुरा कहना या वक्त साथ नहीं देता वगैरह कहना। यह सब सही नहीं है। (मुस्लिम–6136/37)
ऐ बुजुर्गाने दीन और ओलिया किराम को मदद के लिए पुकारने वालों!

https://archive.org/details/@asbah9

तुम्हारा यकीन है कि :–
अली हजवेरी रह. खज़ाने अता करते है।
ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती रह. गरीब नवाज़ है।
अ. कादिर जिलानी रह. (गौ़सपाक) परेशानियां और मुसीबते दूर करते है।
इमाम बरी रह. खोटी किस्मते खरी करते है।
सुल्तान बाहू रह. ओलाद से नवाज़ते है।
ख्वाजा बन्दा गैसू दराज़ रह. हाजते पूरी करते हैं।
कभी तुमने गोर किया कि :–
जब अली हजवेरी रह. न थे तब खजाने कौन अता करता था? जब मोईनुद्दीन चिश्ती रह. नहीं थे तब गरीबों को कौन नवाज़ता था?
जब गौस पाक (जीलानी रह.)नहीं थे तब परेशानियां और मुश्किलात कौन दूर करता था? जब इमाम बरी रह. नहीं थे तब खोटी किस्मते कौन खरी करता था?
जब बन्दा गैसू दराज़ रह. नहीं थे तब हाजते कौन पूरी करता था?
ज़रा सोचिये :– क्या तब अल्लाह नहीं था या अब अल्लाह (नआउज़ुबिल्लाह) नहीं है? फिर हम क्यो हमेशा ज़िन्दा रहने वाले, सारी कायनात को बनाने, थामने और पालने वाले अल्लाह को छोड़कर इधर–उधर भटकते है। आसमानों और ज़मीन मे जो कुछ है, सब अल्लाह ही का है उसे ना ऊंघ आती है और ना नींद उसकी इजाज़त के बिना तो कोई सिफारिश भी ना कर सकेगा। इसलिये उसी को पुकारना चाहिये, उसी से मदद मांगनी चाहिये और दुआ भी सिर्फ उसी से करना चाहिये।

अनस बिन मालिक रजि. से रिवायत है कि नबी सल्ल. ने फरमाया ''दुआ इबादत का मगज़ है (रूह व जान) है।'' (तिर्मिजी 3125)
एक हदीस में है कि ''दुआ ही इबादत है।'' (मुसनद अहमद, तिर्मिजी–3126)
बहुत अफसोस होता है यह देख ओर जानकर कि :– दीने इस्लाम के फ़राइज़ के मुक़ाबले में दीने ख़ान काही का बोल बाला है। मसाजिद अक्सर सूनी और दरबार व मज़ारात पर लोगों का हुजूम नज़र आता है। हमारी अक्सरियत शायद ''व तवासौ बिल्हक्क़ (हक बात की तल्कीन करों) के फ़रीज़े को भूल चुकी है।
सच फरमाया अल्लाह तआला ने ''लोगों की अक्सरयित का यह हाल है कि अल्लाह पर ईमान भी रखते है और उसके साथ शिर्क भी करते है।'' (युसुफ 106) और यह भी कि ऐ नबी सल्ल. ''अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअबूद को ना पुकारों वरना तुम भी सज़ा पाने वालों में शामिल हो जाओंगे।'' (शोअरा–213)
अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हम सभी को शिर्क से महफूज़ रखे, हमे ज़्यादा से ज़्यादा आमाले सालेह करने और हक़ बात कहने–सुनने की तोफीक अता फरमाए। आमीन या रब्बल आलामीन।

1 हमारा मक़सदे हकीक़ी अल्लाह की ख़ुशनुदी, उसके अहकाम की बजा आवरी और अल्लाह के हक़ीक़ी दीन को अपनी ताक़त भर उसके बन्दों तक पहुंचाना है।
''व सल्लललाहु अला नबियिना मुहम्मद व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन। बिरहमतिका या अर हमर राहेमीन।''

अहले इल्म हज़रात से गुज़ारिश है कि
हमारी ग़लती पर हमारी इस्लाह फ़रमाए।
शुक्रिया!
दिनांक 01/01/2009

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
मो.09214836639

https://archive.org/details/@asbah9